

कभी भी नहीं ला जाएगा। परेडो का अनुभव समाजशास्त्र को केवल वही सम्बन्ध खोजना चाहिए जोकि अनुभव दर्शाता है; बारम्बार दोहराए गए परीक्षणों से ऊँचा अन्य कोई सिद्धान्त नहीं है।”

विशिष्ट-चालक की अवधारणा (The Concept of Residues)

यदि हम मोटे तौर पर मानव-व्यवहार को विश्लेषित करें तो उस व्यवहार के दो पक्ष स्पष्ट हो सकते हैं—एक तो अपेक्षाकृत अधिक स्थिर पक्ष होता है और दूसरा अस्थिर या परिवर्तनशील पक्ष। मानव-व्यवहार के स्थिर पक्ष को परेडो ने ‘विशिष्ट चालक’ और परिवर्तनशील पक्ष को ‘भ्रान्त-तर्क’ कहा है। परेडो ने यह स्वीकार किया है कि ये नाम केवल सुविधाजनक ‘संकेत-शब्द’ हैं और यदि कोई चाहे तो इसके स्थान पर अन्य किसी संकेत का भी प्रयोग कर सकता है।

विशिष्ट-चालक क्या है ? (What is Residues)

मानव-व्यवहार के उन स्थिर तत्त्वों का, जिन्हें कि उन्होंने ‘विशिष्ट-चालक’ कहा है, परेडो ने अधिक स्पष्टीकरण नहीं किया और यह सुझाव दिया है कि इसके विषय में मनोवैज्ञानिकों को और अधिक अध्ययन करना चाहिए। कुछ भी हो, समाजशास्त्रियों के लिए यह बहुत ही मूल्यवान् तथा महत्वपूर्ण है। परेडो की कृतियों से ‘विशिष्ट चालक’ के सम्बन्ध में जो कुछ भी ज्ञात होता है वह निम्नलिखित है—

मानव-व्यवहार के निर्धारण में प्रेरणाओं का बहुत बड़ा हाथ होता है। परेडो का ‘विशिष्ट-चालक’ विशेष प्रकार की प्रेरणाएँ हैं। ये ‘विशिष्ट-चालक’ प्रेरणाओं की अपेक्षा अधिक स्थिर होती हैं और इसी कारण मानव-व्यवहार को संचालित और नियन्त्रित करने में इनका पर्याप्त योग होता है। परेडो की व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि यह विशिष्ट-चालक न तो मूल-प्रवृत्ति है और न भावना ही। इन विशिष्ट-चालकों के सम्बन्ध में परेडो ने जो कुछ बताया है, उससे इनका अधिक-से-अधिक स्पष्टीकरण या परिभाषा यह हो सकती है कि विशिष्ट-चालक मूल-प्रवृत्तियों और भावनाओं की अभिव्यक्ति

है। परेटो के शब्दों में, “जिस प्रकार थर्मामीटर में पारे का चढ़ना ताप के बढ़ने की अभिव्यक्ति है, उसी प्रकार विशिष्ट-चालक मूल-प्रवृत्तियों और भावनाओं की अभिव्यक्ति है।” ये विशिष्ट-चालक, जैसाकि पहले ही कहा जा चुका है, अपेक्षाकृत अधिक स्थिर होते हैं। इनकी स्थिरता चाहे मूल-प्रवृत्तियों के कारण हो या भावनाओं के कारण या अन्य किसी कारण से, परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये अधिक अस्थिर तत्त्व नहीं होते।

विशिष्ट-चालक की विशेषताएँ

(Characteristics of Residues)

उक्त विवेचना के आधार पर विशिष्ट-चालकों की तीन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है—

- (1) विशिष्ट-चालक अपेक्षाकृत अधिक स्थिर होते हैं;
- (2) विशिष्ट-चालक स्वयं मूल-प्रवृत्ति या भावना नहीं होती वरन् इनकी अभिव्यक्ति होती है; और

(3) विशिष्ट-चालकों में तार्किक तत्त्व नहीं होते और न ही तार्किक आधार पर इनकी व्याख्या की जा सकती है या इन्हें समझाया जा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विशिष्ट-चालक आलपोर्ट द्वारा वर्णित ‘शक्तिशाली प्रतिक्षेप’, या पेटराजिट्स्की द्वारा उल्लिखित संवेगों आदि से सम्बन्धित है।

विशिष्ट-चालक की श्रेणियाँ (Categories of Residues)

परेटो के पहले के समाजशास्त्रियों के लेखों में भी कुछ ऐसी शक्तियों का उल्लेख मिलता है जो सामाजिक सन्तुलन की व्याख्या करती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि भूतकाल में भी समाजशास्त्रियों द्वारा अनजाने ही में विशिष्ट-चालकों को खोजा गया है, परन्तु उन खोजों का कोई वैज्ञानिक स्पष्टीकरण उनके लेखों में नहीं मिलता है। परेटो ने उनकी कमी को दूर करने का सचेत प्रयत्न किया, यद्यपि उनके लेखों में भी हमें इस विषय का कोई विशेष स्पष्टीकरण नहीं मिलता है। परेटो ने लगभग पचास विशिष्ट-चालकों की चर्चा की है, किन्तु वे निम्नलिखित छह श्रेणियों में आते हैं—

- (1) सम्मिलन के विशिष्ट-चालक।
- (2) समूह के स्थायित्व के विशिष्ट-चालक।
- (3) बाह्य क्रियाओं द्वारा भावनाओं की अभिव्यक्ति के विशिष्ट-चालक या आवश्यकताएँ।
- (4) सामाजिकता से सम्बन्धित विशिष्ट-चालक।
- (5) व्यक्तित्व के संगठन के विशिष्ट-चालक।
- (6) काम-सम्बन्धी विशिष्ट-चालक।

इन विशिष्ट-चालकों के विषय में जो कुछ पेरैटो ने कहा है वह संक्षेप में इस प्रकार है—

1. सम्मिलन के विशिष्ट-चालक (Residues of Combination)—सम्मिलन के विशिष्ट-चालक परस्पर समान या विरोधी तत्त्वों को मिलाने वाली प्रेरणाएँ हैं। परन्तु इस प्रकार के सम्मिलन का प्रायः कोई तर्कसंगत कारण नहीं होता, यद्यपि हम उनमें अपने विश्वास को उत्पन्न करने और बनाए रखने के लिए कोई-न-कोई उलटा-सीधा तर्क ढूँढ़ने का प्रयत्न अवश्य ही करते हैं। इस प्रकार के विशिष्ट-चालक के प्रभाव के कारण होने वाले परस्पर समान या विरोधी तत्त्वों या चीजों के सम्मिलन के अच्छे उदाहरण स्वप्न में देखी गई चीजों के आधार पर हमारे विश्वास से दिए जा सकते हैं। परस्पर समान चीजों का मेल इस प्रकार करते हैं—तितली देखने में सुन्दर और प्यारी होती है; इसी आधार पर हम विश्वास करते हैं कि सपने में तितली को देखकर आने वाले सुख का द्योतक है। इसके विपरीत, परस्पर विरोधी चीजों का मेल हम इस प्रकार करते हैं—यदि हम सपने में अपने को सुन्दर देखते हैं, तो उसका अर्थ होता है कि हम शीघ्र ही बीमार पड़ने वाले हैं। सपने में सोना देखना आर्थिक हानि का द्योतक है। जादू के क्षेत्र में भी इस प्रकार के विशिष्ट-चालक के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जादू से सम्बन्धित एक नियम के अनुसार यह विश्वास किया जाता है कि समान वस्तु, समान वस्तु पैदा करेगी ही। उदाहरणार्थ, कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि किसी शत्रु को चोट पहुँचना या मारना है तो उस शत्रु की मूर्ति का निर्माण कर उस पर चोट पहुँचानी चाहिए; मूर्ति को जहाँ-जहाँ चोट लगाई जाएगी, उन्हीं स्थानों पर शत्रु को भी चोट पहुँचेगी। उसी प्रकार कुछ जनजातियों के लोग वर्षा लाने के लिए आग जलाते हैं और खूब धुआँ करते हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि धुएँ और बादल में समानता है, इसलिए समान वस्तु (धुआँ) सदैव समान वस्तु (बादल) उत्पन्न करेगी और वर्षा होगी। इस प्रकार के विश्वासों का कोई तार्किक आधार नहीं होता है; यह तो वास्तव में वास्तविकता पर एक पर्दा है, और वास्तविकता पर इस प्रकार का पर्दा डालना ही सम्मिलन के विशिष्ट-चालक का कार्य है।

2. समूह के स्थायित्व के विशिष्ट-चालक (Residues of the Persistence of Aggregates)—ये वे प्रेरणाएँ हैं जो मनुष्य के पारस्परिक सम्बन्धों, मनुष्य एवं स्थानों के बीच सम्बन्धों तथा जीवित और मृत व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों को स्थायित्व प्रदान करती हैं। ये विशिष्ट-चालक मनुष्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति होती हैं और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती हैं। इनके प्रति लोगों के दिल में आदर-भाव होता है। इन्हीं विशिष्ट-चालकों से चालित होकर हम अपने परिवार, नगर, देश या प्रजाति के या इनके सदस्यों के साथ अपना सम्बन्ध बनाए रखते हैं और उन्हें सम्मान प्रदान करते हैं; अपने मरे हुए सम्बन्धियों को याद करते हैं; उनके समाधि-स्थलों पर जाकर फूल चढ़ाते हैं; इतिहास के महापुरुषों से अपना सम्बन्ध बनाए रखने के लिए उनकी जयन्तियाँ मनाते हैं और उनके जीवन से सम्बन्धित स्थलों को देखने जाते हैं। समूह

की स्थिरता या स्थायित्व में इस श्रेणी में आने वाले विशिष्ट-चालकों का महत्वपूर्ण हाथ होता है।

3. बाह्य-क्रियाओं द्वारा भावनाओं की अभिव्यक्ति के विशिष्ट-चालक या आवश्यकताएँ (Residues or Needs of the Manifestation of Sentiments through Exterior Acts)—इस श्रेणी के अन्तर्गत उन विशिष्ट-चालकों को सम्मिलित किया जाता है जोकि हमें अपनी भावनाओं को बाह्य-क्रियाओं द्वारा प्रदर्शित करने को प्रेरित करते हैं। उदाहरणार्थ, हमारी राष्ट्रीयता की भावना अपने को दासता के बन्धन से मुक्त करने के लिए हमें राजनीतिक आन्दोलन या विद्रोह करने को प्रेरित करती है। उसी प्रकार धर्म से सम्बन्धित भावनाओं की अभिव्यक्ति पूजा-पाठ, प्रार्थना आदि बाह्य-क्रियाओं के रूप में होती है। इस प्रकार के विशिष्ट-चालक पशुओं में भी होते हैं। जैसे, अपने मालिक को देखकर कुत्ता खुशी से अपनी पूँछ हिलाने लगता है।

4. सामाजिकता से सम्बन्धित विशिष्ट-चालक (Residues in regard to Sociability)—इस श्रेणी के अन्तर्गत वे विशिष्ट-चालक सम्मिलित किए जाते हैं जोकि मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाते हैं। उनके द्वारा हमें इस बात की प्रेरणा मिलती है कि हम अपने आचरणों या व्यवहारों को अपने उस छोटे या बड़े समूह के अनुरूप बनाएँ जिसके हम सदस्य हैं। संक्षेप में, ये विशिष्ट-चालक हमें अपने व्यवहारों को अन्य व्यक्तियों के समान बनाने की प्रेरणा देते हैं, और इसी उद्देश्य से प्रत्येक व्यक्ति, जिस सामाजिक समूह का वह सदस्य है, उसकी रीति को अपनाता है। दया, क्रूरता, आत्म-बलिदान, श्रेष्ठता अथवा हीनता की भावना, नवीनता के भय आदि इस श्रेणी के विशिष्ट-चालकों के उदाहरण हैं। इस सम्बन्ध में यह प्रश्न उठ सकता है कि क्रूरता किस प्रकार सामाजिकता उत्पन्न कर सकती है? इसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि जब व्यक्ति अपने तथा अपने समूह के व्यवहार में प्रत्येक प्रकार से एकरूपता उत्पन्न करने का प्रयत्न करता है, और उस प्रयत्न में कोई बाधा उत्पन्न होती है तो स्वभावतः वह क्रूर हो जाता है। क्रूरता व्यक्ति की इस इच्छा की अभिव्यक्ति है कि वह उस बाधा को नष्ट करना चाहता है। सामाजिकता से सम्बन्धित विशिष्ट-चालक का एक सबसे अधिक रोचक उपविभाजन तापसीवाद है जोकि एक प्रकार के त्याग द्वारा या शरीर को कष्ट देने की साधना द्वारा अभिव्यक्त होता है। ये सभी विशिष्ट-चालक का एक सबसे एक सबसे अधिक रोचक उपविभाजन तापसीवाद है जोकि एक प्रकार के त्याग द्वारा या शरीर को कष्ट देने की साधना द्वारा अभिव्यक्त होता है। ये सभी विशिष्ट-चालक सामाजिक एकरूपता को उत्पन्न करने वाले और सामाजिक संगठन को दृढ़ करने में सहायक होते हैं।

5. व्यक्तित्व के संगठन के विशिष्ट-चालक (Residues of the Integrity of Personality)—इस श्रेणी के अन्तर्गत वे प्रेरणाएँ आती हैं जोकि व्यक्तित्व के विभिन्न तत्वों या लक्षणों को संगठित या संयोजित करती हैं। इन्हीं विशिष्ट-चालकों के कारण हम उन प्रयत्नों का विरोध करते हैं जोकि सामाजिक या व्यक्तित्व सम्बन्धी सन्तुलन

को नष्ट करने वाले होते हैं। यही विशिष्ट-चालक हमें व्यक्तित्व के विभिन्न और बिखरे हुए तत्वों को फिर से बटोरने और व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने की प्रेरणा देते हैं। उचित और अनुचित का ज्ञान हमें इन्हीं चालकों से होता है जिसके कारण एक नैतिक स्तर बनाए रखने में हमें सहायता मिलती है। इसीलिए बहुधा हम अपने ऊपर तथा अपने समाज के ऊपर होने वाले अनैतिक या अनुचित आक्रमण का विरोध करते हैं। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि इस प्रकार के आक्रमणों से हमारा या समाज का नैतिक पतन हो सकता है, या हमारे व्यक्तित्व और समाज में विघटन की अवस्था उत्पन्न हो सकती है।

6. काम-सम्बन्धी विशिष्ट-चालक (Sexual Residues)—इस श्रेणी के अन्तर्गत वे प्रेरणाएँ आती हैं जोकि यौन-क्षुधा या काम-वासनाओं से सम्बन्धित हैं ये विशिष्ट-चालक प्रायः जटिल रूपों में मिलते हैं और कभी-कभी इनको नियन्त्रित करने के लिए समाज को यौन-सम्बन्धी निषेधों को लागू करना पड़ता है। इसी की अभिव्यक्ति 'यौन-धर्म' के रूप में होती है।

विशिष्ट-चालकों का वितरण (Distribution of Residues)

परेटो के अनुसार उपरोक्त विशिष्ट-चालक प्रत्येक समाज में पाए जाते हैं और वे सभी सामाजिक प्रणाली की अपेक्षा अधिक स्थिर तत्त्व भी हैं। परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इन विशिष्ट-चालकों की शक्ति और वितरण या अनुपात समस्त व्यक्तियों और समूहों में एक-सा होता है। वास्तव में इनकी शक्ति और विभिन्न कालों और विभिन्न व्यक्तियों तथा सामाजिक समूह में भिन्न-भिन्न होता है। ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जिनमें काम-सम्बन्धी विशिष्ट-चालक अत्यन्त शक्तिशाली होते हैं दूसरी ओर ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जिन पर इनका प्रभाव बहुत कम होता है। उसी प्रकार ऐसे समूह तथा शक्ति हैं जिनमें सम्मिलन के विशिष्ट-चालकों का प्रभुत्व होता है, और ऐसे भी समूह या व्यक्ति हैं जिनमें इनका अभाव भी दीखता है। वास्तविकता यह है कि कोई भी सामाजिक व्यवस्था किसी अन्तिम या पूर्ण रूप से स्थिर सिद्धान्त के आधार पर नहीं चलती बल्कि यह सदैव सापेक्षिक होती है और इसमें परिवर्तन भी होता रहता है। इन परिवर्तनों के साथ-साथ उक्त विशिष्ट-चालकों की व्यक्तियों और वितरण में भी परिवर्तन होता जाता है। इस प्रकार परेटो के अनुसार, विशिष्ट-विचार समय कारक और सामाजिक परिस्थितियों से सम्बन्धित हैं और इनमें परिवर्तन के साथ-साथ ये स्वयं भी परिवर्तित होते रहते हैं।

विशिष्ट-चालक का महत्त्व (Significance of Residues)

परेटो का यह कहना है कि ये विशिष्ट-चालक मानवीय व्यवहार के निर्धारण में महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मानवीय क्रियाएँ और व्यवहार इनके द्वारा ही संचालित होते हैं। इस कारण ये विशिष्ट-चालक सामाजिक व्यवस्था में सन्तुलन बनाए रखने में भी बहुत सहायक सिद्ध होते हैं। ये विशिष्ट-चालक प्रायः परस्पर विरोधी होते हैं। साथ ही, इनका

कोई तार्किक आधार भी नहीं होता है। इस कारण इन विशिष्ट-चालकों को अतर्कसंगत तत्त्व मान लेना ही उचित होगा। चूँकि ये विशिष्ट-चालक अतर्कसंगत तत्त्व हैं, इस कारण इनके द्वारा संचालित व्यवहारों को भी तार्किक आधार पर उचित प्रमाणित करना सम्भव नहीं होता। वास्तविकता यह है कि हम किसी व्यवहार को उसकी सत्यता या असत्यता, तार्किक या अतार्किक आधार पर स्वीकार नहीं करते हैं, बल्कि विशिष्ट-चालक हमें कुछ विशेष व्यवहारों या क्रियाओं को करने या स्वीकार करने की जो प्रेरणा देते हैं, हमारे अनेक व्यवहार उसी का परिणाम होते हैं।

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि विशिष्ट-चालक मानवीय व्यवहार को निर्धारित करने में ही नहीं, अपितु उसे नियन्त्रित करने में भी महत्वपूर्ण होते हैं। उदाहरणार्थ, सम्मिलन के विशिष्ट-चालक से व्यक्ति को परस्पर समान या विरोधी तत्त्वों को मिलाने की प्रेरणा मिलती है। इसी प्रेरणा के कारण हम विश्वास करते हैं कि स्वप्न द्वारा लोगों को इस प्रकार की सूचना या संकेत मिल सकते हैं जोकि हमारे लिए लाभदायक या हानिकारक हों, कि कुछ दिन शुभ, तो अन्य दिन अशुभ हैं, कि कुछ पौधों में रोग ठीक करने का गुण है। ये सभी विश्वास हमारे व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं और करते भी हैं। पेरेटो ने लिखा है कि इसी प्रकार के अनेक शक्तिशाली और लोकप्रिय विश्वास हैं, जिनको कि रहस्यपूर्ण ढंग से सामाजिक घटनाओं के साथ न केवल जोड़ा जाता है, बल्कि वर्तमान सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करने में उनकी मदद भी ली जाती है। “मानवतावाद और एकता उन सब सम्मिलनों से अधिक कुछ भी नहीं हैं जोकि हमारे बुद्धिवादियों की भावुककता को प्रसन्न करते हैं और तर्क के रंग से रंगे होते हैं।” उसी प्रकार समूह के स्थायित्व के विशिष्ट-चालक का भी अपना महत्व है। जैसाकि पहले ही कहा गया है, ये वे प्रेरणाएँ हैं जो एक मनुष्य को अन्य व्यक्तियों (जीवित अथवा मृत) से तथा स्थान-विशेष से जोड़ती हैं और उनके पारस्परिक सम्बन्ध को स्थायित्व प्रदान करती हैं। मनुष्य और मनुष्य के बीच का सम्बन्ध यदि स्थायी न हो तो समाज की स्थिरता व निरन्तरता भी सम्भव न हो। इसी विशिष्ट-चालक के कारण व्यक्ति अपने को केवल अन्य व्यक्तियों से ही नहीं, बल्कि स्थानों से भी सम्बन्धित पाता है। अपने गाँव, अपने देश या अपनी मृतभूमि के साथ जिस आन्तरिक सम्बन्ध का एक व्यक्ति अनुभव करता है, उसी के आधार पर वह उनके लिए मर-मिटने को भी तैयार रहता है। इसी आधार पर विशेष-विशेष स्थानों की हम खासतौर से रखवाली करते हैं, जीवित या मृत महापुरुषों की जयन्तियाँ मनाते हैं या उनके प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं, उनके विचारों और आदर्शों को दोहराते हैं और ऐसा करते हुए अपने सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन के अनेक तत्त्वों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करते और उसे स्थायित्व प्रदान करते हैं।

अपनी भावनाओं को अपने ही अन्दर दबाए रखने के बजाय उनकी बाहरी अभिव्यक्ति बहुधा हमारे समाज के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। उदाहरणार्थ, यदि हमारी राष्ट्रीयता की भावना अपने को दासता के बन्धन से मुक्त करने के लिए हमें अंग्रेजों

के विरुद्ध आन्दोलन करने की प्रेरणा न देती तो आज भी हम स्वतन्त्र न हो पाते। यह प्रेरणा हमें बाह्य-क्रियाओं द्वारा भावनाओं की अभिव्यक्ति के विशिष्ट-चालक के द्वारा ही प्राप्त होती है। उसी प्रकार, सामाजिकता से सम्बन्धित विशिष्ट-चालक मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाता है या सामाजिक प्राणी बनने की प्रेरणा देता है, जबकि व्यक्तित्व के संगठन के विशिष्ट-चालक अपने व्यक्तित्व के विभिन्न तत्त्वों को संगठित करने और उसे ऊँचा उठाने की प्रेरणा देते हैं। वास्तव में वे दोनों विशिष्ट-चालक एक-दूसरे के पूरक हैं। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि विभिन्न विशिष्ट-चालक प्रायः एक साथ मिलकर जटिल स्वरूपों में प्रकट होते हैं और उनका प्रभाव हमारे वैयक्तिक तथा सामाजिक दोनों ही जीवनो पर अत्यधिक गहरा होता है। जैसाकि हम आगे विवेचना करेंगे, परेटो ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया तक को विशिष्ट-चालकों के आधार पर समझाने का प्रयत्न किया है।



भ्रान्त-तर्क की अवधारणा

(The Concept of Derivations)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिक प्राणी के रूप में वह अनेक प्रकार से क्रिया और व्यवहार करता है। एक व्यक्ति जो कुछ करता है, यह सोचकर ही करता है कि वह ठीक या उचित कर रहा है। परन्तु हो सकता है कि दूसरे लोग या समूह उसके कुछ कार्यों को उचित या ठीक न मानें। ऐसी अवस्था में व्यक्ति को अपनी सफाई देनी होती है कि उसका कोई भी कार्य या व्यवहार अनुचित नहीं है। अपने व्यवहार या कार्य के औचित्य को प्रमाणित करने के लिए व्यक्ति अपनी प्रकृति, परिस्थितियों और आदर्शों के अनुसार अनेक युक्तियाँ या सफाइयाँ पेश करता है। इन्हीं को परेटो ने भ्रान्त-तर्क कहा है। मनुष्य को जब कभी भी अपने कार्यों के औचित्य को प्रमाणित करने या उसके 'वास्तविक' (कर्त्ता के दृष्टिकोण से) गुणों को दिखाने, प्रमाणित करने तथा उसकी व्याख्या करने की आवश्यकता होती है, तभी वह भ्रान्त-तर्कों का सहारा लेता है और वह अपने कार्य के पक्ष में बहुत-कुछ कह जाता है, चाहे उनकी सामाजिक उपयोगिता हो या नहीं। ये भ्रान्त-तर्क इस अर्थ में भ्रान्त हैं कि ये सामान्य मत के विरुद्ध अतर्कसंगत तथा अप्रयोगसिद्ध आधारों पर आधारित होते हैं। इस कारण ये हमें प्रायः गलत निष्कर्षों पर पहुँचाते हैं। इस दृष्टि से भ्रान्त-तर्क विशिष्ट-चालकों से कहीं अधिक अस्थिर, विविध, परिवर्तनीय तथा परस्पर-विरोधी होते हैं। अतः स्पष्ट है कि इनका कोई स्थान परेटो के तार्किक-प्रयोगात्मक विज्ञान के क्षेत्र में नहीं हो सकता। परेटो के अनुसार कोई भी समाजशास्त्री, जोकि घटनाओं की व्याख्या या विश्लेषण में इन भ्रान्त-तर्कों को किसी भी रूप में स्वीकार करता या मान्यता देता है, विज्ञान-सम्मत निष्कर्षों पर कदापि नहीं पहुँच सकता। ऐसे निष्कर्ष सदैव ही गलत, अतर्कसंगत तथा छद्म-वैज्ञानिक होते हैं।

भ्रान्त-तर्क का अर्थ (Meaning of Derivation)

एच.पी. फेयरचाइल्ड ने लिखा है कि परेटो तथा उनके अनुयायियों के मतानुसार, “भ्रान्त-तर्क क्रियाओं का वह व्यापक क्षेत्र है जिसके द्वारा मनुष्य व्यवहार की तार्किकता या औचित्य के सम्बन्ध में स्वयं अपने तथा अपने साथियों को समझाने या विश्वास दिलाने का प्रयत्न करता है।” कर्ता अपनी समझ में या अपने दृष्टिकोण से अपने व्यवहार की यथार्थता या औचित्य को बड़े ही तार्किक ढंग से प्रस्तुत करता है; परन्तु वास्तव में न वे सत्य होते हैं और न ही उचित। इन भ्रान्त-तर्कों को उनकी सत्यता या असत्यता के आधार पर स्वीकार या अस्वीकार नहीं किया जाता है, बल्कि उन्हें स्वीकार या अस्वीकार इस कारण किया जाता है कि वे हमारे संवेग और भावनाओं को उचित या अनुचित प्रतीत होते हैं। प्रचार, विज्ञापन, फैशन आदि इसी प्रकार के भ्रान्त-तर्कों पर आधारित हैं। वैज्ञानिक सिद्धान्तों की अपेक्षा इन भ्रान्त-तर्कों को लोग अधिक सरलता से स्वीकार कर लेते हैं। यदि इन भ्रान्त-तर्कों को किसी प्रबल विशिष्ट-चालक की सहायता प्राप्त हो जाए, तब तो इन्हें लोग और भी सरलता से मान लेते हैं। दूसरे शब्दों में, विशिष्ट-चालक इन भ्रान्त-तर्कों को जीवनशक्ति तथा पुष्टता प्रदान करता है। इस कारण यदि हमें व्यक्तियों के मत और विचारधाराओं को बदलना है, तो उसका सबसे उत्तम उपाय यह है कि हम सर्वप्रथम विशिष्ट-चालकों को बदलने का प्रयत्न करें। यदि हम विशिष्ट-चालकों को बदलने में सफल होंगे तो उससे सम्बन्धित भ्रान्त तर्क भी स्वयं बदल जाएंगे।

परेटो ने दृढ़तापूर्वक यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि उनके पूर्व के अधिकतर राजनीतिक, आर्थिक, समाजशास्त्रीय तथा अन्य सिद्धान्त असंख्य भ्रान्त-तर्कों द्वारा अत्यधिक प्रभावित थे। इस कारण उनके आधार पर घटनाओं की वास्तविकता का ज्ञान नहीं हो पाता है। वे सभी नियम सैद्धान्तिक, अवैज्ञानिक, अतार्किक तथा उपदेशमूलक रहे हैं। किसी-न-किसी तरह से उन पर भ्रान्त-तर्कों का प्रभाव स्पष्ट दीखता है और उसी प्रभाव के कारण उन नियमों को प्रतिपादित करने वाले विद्वानों ने अपने नियमों की तार्किकता या औचित्य को अनेक प्रकार से हमें समझाने का प्रयत्न किया है। इस दृष्टिकोण से, परेटो ने अनेक समकालीन प्रख्यात सामाजिक विचारकों, जैसे कॉम्ट, स्पेन्सर, समनर, मेन आदि द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों तथा नियमों को अस्वीकार किया है। परेटो के मतानुसार प्रगति, संगठन, न्याय, समानता, प्रजातन्त्र, समाजवाद, राष्ट्रीयतावाद आदि अवधारणाएँ तथा मानवता का धर्म आदि सिद्धान्त किसी-न-किसी रूप में भ्रान्त-तर्कों पर आधारित हैं। इस कारण उन्हें वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता।

भ्रान्त-तर्क के प्रकार (Types of Derivations)

परेटो के अनुसार गौण उपविभाजनों को छोड़कर भ्रान्त-तर्कों के निम्नलिखित चार वर्ग हैं—

1. घोषणाएँ (Affirmations)—इस वर्ग के भ्रान्त-तर्कों से परेटो का तात्पर्य उन साधारण घोषणाओं या कथनों से जो विज्ञान की भाँति अनुभव तथा परिमाणात्मक तथ्यों

पर आधारित नहीं होते हैं। फिर भी, इनकी पुष्टि में वास्तविक अथवा काल्पनिक तथ्यों को प्रस्तुत किया जा सकता है। ये कथन इतनी दृढ़ता और जोरदार शब्दों में व्यक्त किए जाते हैं कि उनमें सहज ही विश्वास उत्पन्न हो जाता है। यदि इस प्रकार की घोषणा की भाषा जोरदार शब्दों और छपे हुए अक्षरों में प्रकाशित होती है, तो उसका प्रभाव सहज ही दूसरों पर पड़ता है। जब कभी ऐसी घोषणाओं में तथ्यों के साथ भावनाओं का मेल हो जाता है तो स्वभावतः ही उसका प्रभाव लोगों के मस्तिष्क पर सरलता से पड़ता है। घोषणा का प्रभाव इस बात पर निर्भर है कि उसे कितनी बार दोहराया जाता है। बिल्कुल ही झूठा कथन भी सच प्रतीत होने लगता है यदि उसे बार-बार दोहराया जाए।

2. अधिकार या अधिसत्ता (Authority)—इस श्रेणी के अन्तर्गत वे भ्रान्त-तर्क आते हैं जिनके पीछे कोई शक्ति अथवा सत्ता होती है। किसी कारणवश जब एक व्यक्ति एक क्षेत्र में प्रतिष्ठित हो जाता है, तब गलती से लोग उसे दूसरे क्षेत्र में भी प्रतिष्ठित मान लेते हैं, जबकि वास्तव में उसे उस क्षेत्र के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं होता है; फिर भी उसकी प्रतिष्ठा के कारण उसके कथनों को लोग सहज ही में मान लेते हैं। यह शक्ति केवल व्यक्तिगत न होकर ईश्वरीय या सामाजिक शक्ति भी हो सकती है। उदाहरणार्थ, अनेक धार्मिक नियम इस प्रकार के होते हैं जिनका पालन एक प्रकार से अनेक के लिए अनिवार्य हो जाता है क्योंकि उनके पीछे कोई ईश्वरीय शक्ति या सत्ता छिपी हुई होती है। उसी प्रकार प्रथा, परम्परा आदि में सामाजिक सत्ता अभिव्यक्त होती है और इसलिए वे अत्यन्त शक्तिशाली होते हैं और मानव-व्यवहार के नियन्त्रण में इनका पर्याप्त हाथ होता है।

3. भावना या सिद्धान्तों से अनुरूपता (Accord with Sentiments of Principles)—इस श्रेणी के अन्तर्गत उन भ्रान्त-तर्कों को सम्मिलित करते हैं जो किसी कार्य के औचित्य को प्रमाणित करने के लिए एक व्यक्ति प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के तर्क कुछ भावनाओं पर आधारित होते हैं, और उसी आधार पर कार्य को उचित मान लिया जाता है। इस प्रकार की भावनाएँ, जिन पर कि भ्रान्त-तर्क आधारित होता है, व्यक्ति से, विधान से या ईश्वर से सम्बन्धित हो सकती हैं। उदाहरणार्थ, किसी कार्य को करके कोई नेता यह तर्क प्रस्तुत कर सकता है कि उसने यह काम राष्ट्रीय हित के लिए किया है। भूतकाल के कुछ विद्वानों ने सुखद भावनाओं के आधार पर अपराधी-व्यवहार तक को समझाने का प्रयत्न किया है। उसी प्रकार नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, वैधानिक और ऐसे कितने ही नियम और सिद्धान्त बने हुए हैं जोकि भावनाओं पर आधारित हैं।

4. मौखिक प्रमाण (Verbal Proofs)—इन श्रेणी के अन्तर्गत वे मिथ्या तर्क, कुतर्क, सन्देहमूलक और द्विअर्थक बातें आती हैं जो वास्तविक तथ्यों के अनुरूप नहीं होतीं, लेकिन जिन्हें व्यवहार का आचरण का औचित्य सिद्ध करने के लिए उपयोग किया जाता है। परेदों ने इस प्रकार के भ्रान्त-तर्कों को इतना अधिक महत्त्व दिया है कि आपने

एक पूरे अध्याय में इस प्रकार के भ्रान्त-तर्कों की अनन्त जटिलताओं पर विचार किया है। ये भ्रान्त-तर्क प्रायः अन्य प्रकार के भ्रान्त-तर्कों से जुड़े रहते हैं और उनमें अनेक विशिष्ट-चालक भी अन्तर्निहित हो सकते हैं। केवल पौराणिक गाथाओं में ही नहीं, बल्कि अतीत काल के अनेक विद्वानों के लेखों में भी इस प्रकार के अनेक मौखिक प्रमाण मिलते हैं।

परेटो इस मत से सहमत नहीं हैं कि भ्रान्त-तर्क समाज के लिए बिल्कुल ही अनुपयोगी या हानिकारक होते हैं। आपका विश्वास तो इसके कुछ विपरीत ही है। परेटो का कहना है कि यह सच है कि भ्रान्त-तर्क सत्य नहीं होते, इस कारण सामाजिक घटनाओं की व्याख्या में इनके प्रभावों से प्रत्येक वैज्ञानिक को सदैव बचने का प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि ये भ्रान्त-तर्क समाज के लिए उपयोगी नहीं हैं। परेटो ने अपने अध्ययन में इस बात को प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि अनेक भ्रान्त-तर्क ऐसे भी हैं जो सामाजिक व्यवस्था में एकता बनाए रखने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं, जबकि कितने ही सत्य ऐसे भी हैं जोकि सामाजिक व्यवस्था या संगठन के लिए घातक सिद्ध हुए हैं। इस प्रकार परेटो के अनुसार, “यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक सत्य उपयोगी हो और प्रत्येक अन्धविश्वास हानिकारक ही हो।” ✓